an>

Title: Need to formulate a comprehensive plan for proper conservation and protection of flora and fauna in Sita Mata wildlife sanctuary in Rajasthan.

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी (चित्तौड़गढ़) : चित्तौड़गढ़ एवं प्रतापगढ़ की सीमा पर सीता माता अभ्यारण्य स्थित है। धार्मिक पृष्ठभूमि वाले इस अभ्यारणय का इतिहास रामायण कालीन रहा है। माता सीता के वनवास का साक्षी सीता माता अभ्यारण्य प्राकृतिक संपदा से भी परिपूर्ण है। पौराणिक अवशेष के रूप में इस अभ्यारण्य में भागी बावड़ी, बाल्मिकी आश्रम, लवकुश के पद चिन्ह, हनुमान वाणी आदि हैं। अभ्यारण्य में अभी भी कई स्थानों पर पुराने अवशेष दिखाई देते हैं। यह अभ्यारण्य 429 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। विभिन्न प्रकार की दुर्लभ जड़ी-बूटियां भी इस क्षेत्र में पाई जाती हैं। यहां पर 12 बीघा में फैला हुआ एक वट वृक्ष भी आकर्षण का केन्द्र है। सीता माता अभ्यारण्य में कैंसर के उपचार के लिए हस्ती पलाश एक पौधा भी पाया जाता है जिसके पत्तों के रस के सेवन से कैंसर रोगी को राहत मिलती है। प्राकृतिक दुर्लभ संयोग के रूप में ठण्डे एवं गर्म पानी का एक नाला भी समान रूप से बहता है। सीता माता अभ्यारण्य प्राकृतिक संपदा से भरा होने के साथ ही अपने आप में प्रकृति के कई दुर्लभ रूप समेटे हुए हैं। विश्व में अमेरिका के बाद केवल यहां पर इसी अभ्यारण्य में उड़न गिलहरी पाई जाती है जो अपने आप में विशिष्ट पहचान लिए हुए हैं। अभ्यारण्य में सभी प्रकार के वन्य प्राणी रहते हैं।

अतः सीता माता अभ्यारण्य के ऐतिहासिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए मैं माननीय वन एवं पर्यावरण तथा पर्यटन मंत्री से मांग करता हूं कि पौराणिक महत्व के सीता माता अभ्यारण्य के लिए विशेष सहायता एवं विकास की एक योजना तैयार कर दुर्लभ जीव-जन्तुओं एवं प्राकृतिक संपदा का संरक्षण एवं सुरक्षा के व्यापक प्रबंध करने का निर्णय लिया जाना चाहिए ताकि ऐतिहासिक अवशेषों का संरक्षण हो। वन्य प्राणियों की सुरक्षा एवं संरक्षण का प्रयास हो। साथ ही वन क्षेत्र के विस्तार के लिए वृहद स्तर के वृक्षारोपण की योजनाएं बनाने की मांग करता हूं।